

Level 4

भऽ जाएब छू (बाल चौबटिया-सड़क नाटक) (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले-Maithili's First Climate Fiction Play originally Published in 2012)

Author: Gajendra Thakur
Illustrators: Hari Kumar Nair, Marion Drew , Rohan Chakravarty, Ruchi Shah, Shloka Arvind, Somesh Kumar, Sonal Gupta Vaswani, Students of Himalayan Public School, Sunaina Coelho , dia yadav



भऽ जाएब छू (बाल चौबटिया-सड़क नाटक) (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's First Climate Fiction Play originally Published in 2012)

गजेन्द्र ठाकुर

नाटककार गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।



भऽ जाएब छू

(बाल चौबटिया-सड़क नाटक)

सूत्रधार: आउ, आउ। ऐ चौबटिया नाटक, सड़क नाटक देखबाले आउ।

(सूत्रधार लोक सभ दिस तकै छथि।| हमर कलाकार सभ गप-शप करैत हल्ला जेकाँ करैत छथि।)

भीड़सँ आएल पुरुष कलाकार: (कलाकार सभक गोलसँ बहार भऽ निकलैत)- की हौ। की सभ बाजि रहल छह हौ। की छिऐ ?

सूत्रधार: सभ जुमि कऽ आउ। घेराबा बना लिअ। मैथिली चौबटिया नाटकले घेरा बना कऽ ठाढ़ भऽ जाऊ। चोटगर नाटक हएत।

भीड़सँ निकलि कऽ आएल दोसर महिला कलाकार: चल रे चल। एकरा सभक मैथिली नाटक हेबऽ दही। नाटक देखलासँ भोजन चलतौ रौ।



सूत्रधार: नै यै दाइ। भुखलेबला लेल ई नाटक छै। पेटक भूख, मोनक भूख आ बोलीक भूख।
महिला कलाकार: से छै। तखन आबै जाइ जो।
सूत्रधार: आबै जाउ, आबै जाउ। आइ हएत बच्चा, किशोर, युवा, प्रौढ़ आ बूढ़क लेल नाटक। स्त्री-पुरुषक लेल नाटक। चिड़ै-चुनमुनी लेल नाटक, गाछ-बृच्छ लेल नाटक, हबा-बसात लेल नाटक। सूर्य-चन्द्र-तरेगण लेल नाटक। मूर्त-अमूर्त लेल नाटक। देश लेल नाटक। निन्न आ सपना लेल नाटक।
(महिला सूत्रधार बिच्चहिमे आबि जाइ छथि। भीड़सँ आएल वएह महिला कलाकार महिला सूत्रधार बनि सकै छथि।)



महिला सूत्रधार: हे। सोझे कहू ने जे ककरा लेल ई नाटक नै छै। एना पैघ-पैघ गप किए दऽ रहल छी।

सूत्रधार: कोनो नाम छुटि गेलै की ?

महिला सूत्रधार: यएह लिअ। सेहो हमहीं कहू। आब ताम-झाम शुरू करू आ देखाउ जे की विस्तार लेने अछि ई नाटक।

सूत्रधार: बेस तँ शुरू करू।



(कलाकार सभ एक दोसरामे मिज्झड़ भऽ एक-एकटा फराक पाँती बनबैत छथि। छोट, किशोर, युवा आ बूढ़क पाँती। स्त्री-पुरुषक पाँती। चिड़ै-चुनमुनी जेकाँ छोट बौआ आ छोट बुच्ची बजैत अछि। किशोर सभ हाथमे गाछ-बृच्छक हबा-बसातमे हिलैत पातक फोटो लऽ लैत छथि। युवा पुरुष सूर्य-तरेगणक फोटो आ युवा स्त्री-चन्द्रक फोटो लेने अबैत अछि लेने अछि तँ बूढ़ आ बूढ़ी भूत-प्रेत, भगवान आ स्वप्नक फोटो हाथमे लऽ लैत छथि।)



१ छोट बौआ: हम ओम। हम चिड़ै। नै भगजोगनी।
२ छोट बुच्ची: हम आस्था। हम चुनमुनी। हा हा (हँसैत)। भगजोगनी।
३ किशोर बौआ: हम जयन्त। हम गाछ।
४ किशोर बुच्ची: हम अपाला। हम बृच्छ। हैं हैं (हँसैत)।
५ युवा: हम विजय। हम सूर्य तरेगण।
६ युवती: हम विजया। हम चन्द्र माने चन्दा। खी-खी (हँसैत)।
७ वृद्ध: (थड़थड़ाइत) हम नेकलाल। हम भूत-प्रेत-राकश...।
८ वृद्धा: हम रामवती। हम स्वप्न माने कल्पना। हम...हम...हम...।
(कल्पनाक भाव-भंगिमा तीन बेर करैत छथि।)
सूत्रधार: अहाँ सभक काज की ?
महिला सूत्रधार: अहाँ सभक काज की ?
(आब छोट बौआकेँ –ओमकेँ- १ छोट बुच्ची- आस्थाकेँ- २ एना ८ धरि कहब।)



१ सँ ८ (संगे-संग): हम सभ कोनो काजकेँ ढंगसँ कऽ देब, कहि कऽ तँ देखू।

महिला सूत्रधार: चिड़ै-चुनमुनी, दुनू गोटे आउ आ भगजोगनी बनि जाउ।

(१ सँ ८ संगे-संग चिकड़ऽ लगैत अछि। तखने १ आ २ झोंझसँ निकलि कऽ बगलमे राखल झोरासँ भगजोगनीक फोटो आ दूटा लेजर लाइट लऽ अनै छथि आ शेष छह गोटे एकटा चद्दरिसँ दुनू गोटेकेँ अढ़ कऽ दै छथि।)

१ : (लेजर लाइट बड़बै छथि): कतऽ छी आस्थू।

२ : (चद्दरिसँ बहार भऽ लेजर लाइट बड़बैत) हमदेख लेलौं ई संकेत। हम ओतऽ छलौं झोँझमे।

१ आ २ (संगे संग बजैत): हँ भऽ गेल।

७ आ ८ (संगे बजैत): की भऽ गेल?



१: देखलौं नै जे कोना प्रकाशसँ हमसभ एक दोसराकेँ ताकि लेलौं।
७: ई तँ जखन हम मनुक्ख रही, माने मुइलाक पहिने, तखन खूब प्रयोग करैत रही। की यै रामवती।
८: करैत तँ रही, मुदा प्रकाश संग कतेक गर्मी आबि जाइ छलै। गुमारसँ जान चलि जाइ छल।
७: हे, प्रकाश हेतै तँ गर्मी तँ बहार हेबे करतै।
८: नेकलालजी। सोलह आना ऊर्जामे सँ पन्द्रह आना गर्मी आ एक आना मात्र प्रकाश आनै छलौं अहाँ। बड़का वैज्ञानिक बनै छलौं। प्रकाश तँ आबै छल मुदा गुमारसँ जान चलि जाइ छल।



७: अहाँ तँ छीहे कल्पना। मुइलाक बाद तेँ ने बनि गेलौं कल्पना।

८: आ तेँ ने अहाँ बनि गेलौं भूSSSSSत, प्रेSSSSSत, राकश।

७: (कने तमसाइत) हे तँ अहीं कहू जे प्रकाश बिन गर्मीक भेट सकैए। (लोकसभ दिस हाथ पसारि कS तकैत अछि)

५: (सोझाँ अबैत): नै, ई सम्भव नै अछि।

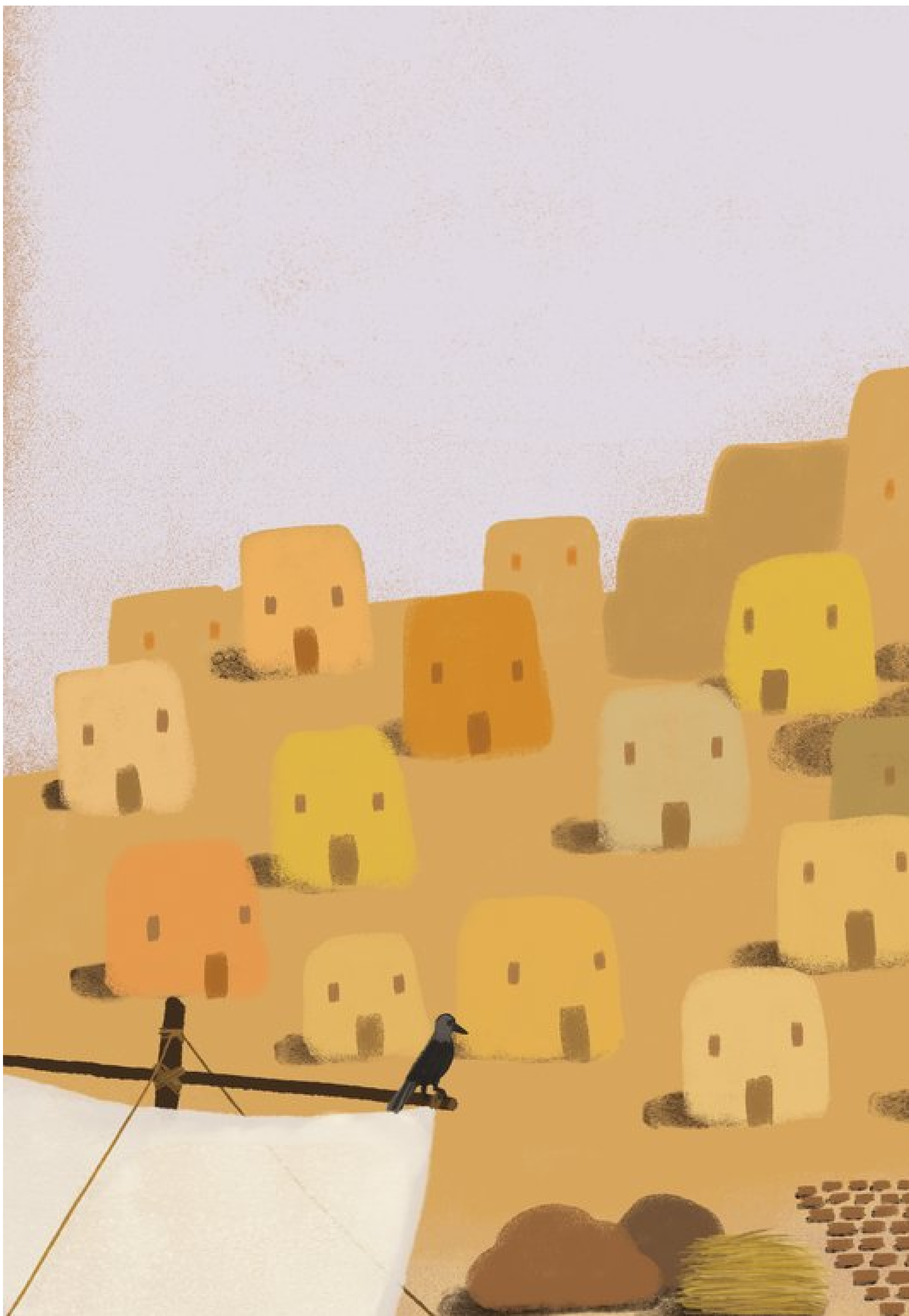
६: ई सम्भव अछि विजय।

५: आबि गेली विजया!!! (आश्चर्यसँ हाथ पसारैत अछि।) हिनकासँ कने पूछू जे हिनका लग अपन प्रकाश छन्हि की?

८: नै छन्हि मुदा तैयो रातिमे जे हिनकासँ इजोरिया छिटकैए से ठंढा तँ लगिते अछि।

७: हा!!! कल्पना!!! अपने फुरेने बजैत जाउ...बजैत जाउ...!!!

८: अहाँ जँ जिबैतेमे हमर गप सुइतौं, कल्पना करितौं तँ बना सकितौं बिन गुमारबला प्रकाश। ठंढ़ा प्रकाश।



७: सुनऽ हौ ओम-आस्था, बिन गुमारबला प्रकाश !!
(आश्चर्य प्रकट करैत हाथ पसारैत अछि।) आब तोँहीं सभ बताबह जे बिन गुमारबला प्रकाश सम्भव नै छै।

१ आ २ : (आशचर्यसँ हाथ पसारैत) प्रकाशसँ गर्मी निकलतै तँ भगजोगनी तँ मरिये जेतै।

८: तखन तों सभ कोना जीवित छह।

१: माने?

२: प्रकाश तँ ठंढ़ा होइ छै।

१: हमर पुछरीसँ बहराइए प्रकाश, शीतल प्रकाश।

२: करैए मोन ठंढ़ा। दैए संकेत आ ताकि लै छी हम सभ एक-दोसराकेँ।

८: ओह, हम तकैत रहि गेलौं रातिमे दूर देशक चन्द्रमा आ करैत रहि गेलौं कल्पना। मुदा अहाँ नेकलाल, किए नै देख सकलौं रातिमे घुमैत भग जोगनी सभकेँ।

७: असफल वैज्ञानिक छी हम। राकश बनि घुमै छी, प्रकाशक ऊर्जासँ जड़ै छी। कल्पने, हम नै कऽ सकलौं कल्पना, नै तँ बनि जइतौं भगजोगनी।



८. जे पूरा कऽ दैतौं अहाँ हमर ओ कल्पना तँ हमहूँ बनि जइतौं भगजोगनी, । नै कटितै एतेक रास गाछ-बृच्छ, बोन देखू कतेक दूर भेल देखाइए (दूर बाध दिस आंगुर देखबैत अछि।)

३ आ ४ (समवेत स्वरमे) असगर भऽ गेल छी हम सभ। सूर्य तरेगन चन्द्रमा सन असगर।

(ऐ दुनूकेँ छोड़ि कऽ सभ कलाकार भीड़मे मिज्झर भऽ जाइ छथि।)

४: असगरे रहि गेल छी हम सभ। किछु दिनमे खतम भऽ जाइ जाएब।

३: लगैए सएह। बनि जाएब भूत, प्रेत, राकश।

(तखने भूत-प्रेत बनल वृद्ध अबैए।)

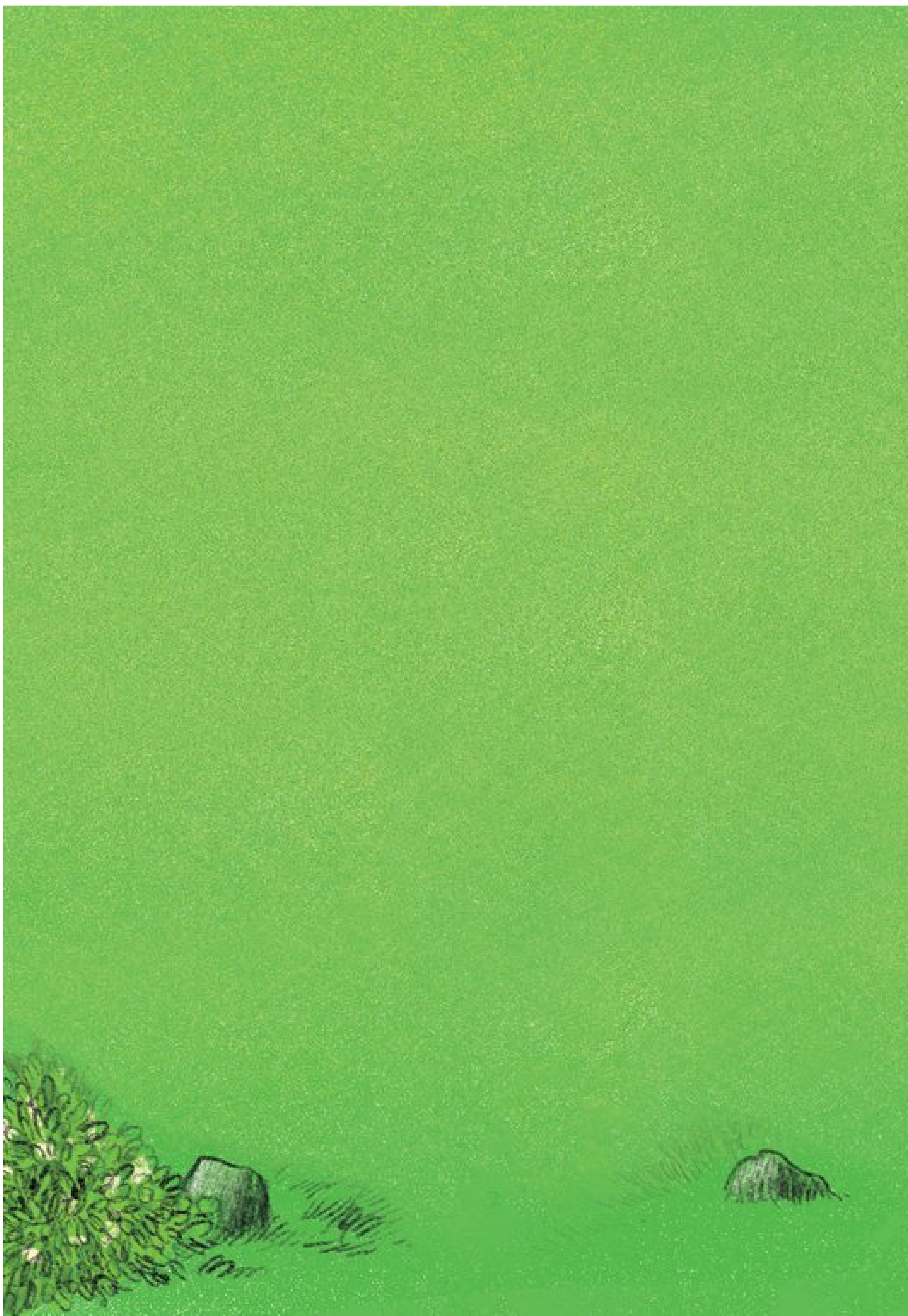
७: से किए, अहाँ सभक ई स्थिति कोना भेल।

३: अहाँ द्वारे।

४: अहीं दुआरे।

७: आब हम की कऽ देलौं।

३: कागच बनबैले हमरा काटलौं।



४: मकान बनबैले हमरा काटलौं।
७: मुदा से तँ जरूरी छल। से तँ करैए पड़ितै किने।
३: तँ हमरा रोपलौं किए नै। कल्पना किए नै केलौं।
(तखने वृद्धाक प्रवेश होइए।)
८: कहू। कल्पना किए नै केलौं?
७: कोन कल्पना।
८: कल्पना जे कतेक काटी आ तकर कतेक गुना रोपी।
७: मुदा हम तँ रोपलौं।
३: अहाँ रोपलौं यूकेलिप्टस।
४: अहाँ रोपलौं विदेशी गाछ।
३: खून..नै नै..पानि पीब गेल सभटा ऐ जमीनक।
७: हे सभटा हमरे दोख नै दै जाउ। की अहाँ सभ ऊर्जा नै खर्च करै छी? हम वैज्ञानिक छी। सभटा बुझल अइ हमरा।
(३ आ ४ समवेत स्वरमे गीत गाबै छथि।)



ऑक्सीजन जरा भोजन बनबै छी
काज मोताबिक सेहो जरबै छी
जाड़क मासमे गरम रहै छी
नै होइ छै सगरो गरमी तँए
(नाचऽ लगै जाइए।)

७: बुझल अछि हमरा ई सभ। मुदा गर्मी कम्मे सही आनै तँ छी।

३: मुदा सेहो अहीं सभ लेल।

७: हमरा सभ लेल। कोना..कोना?

४: जाड़मे फूल तोड़ैकाल हाथ नै ठिठुरए अहाँ सभक तेँ कमलक फूलकेँ गरम राखै छी।

७: हे तँ कियो अहाँकेँ काटैए तँ अपन सुरक्षा अपने किए नै करै छी।

८: कल्पना..सोचू सोचू।



३: करै छी।
४: जतेक सक बनि पड़ैए, ततेक करै छी।
(३ आ ४ समवेत स्वरमे गीत गाबै छथि।)
काँट देखा कऽ दूर भगाबी
फल खुआ कऽ भूख भगाबी
फूल तोड़ि कऽ, लऽ जाउ
देवता पितरपर अहाँ चढ़ाउ
(नाचऽ लगै जाइए।)
३: फल-फूलक लालचो दै छिऐ।
४:काँट देखा कऽ डराबितो छिऐ
३: मुदा तैयो नै मानै जाइए।
८: कल्पना..सोचू, सोचू।
७: (वृद्धा रामवती दिस तकैत।) हे कल्पने। हमरा जे अहाँ कहै छलौं जे कतेक काटी, तकर कतेक गुना रोपी, से हिनको सभकेँ कहियौन्ह ने।

८: हिनकर सभक पएर तँ माटिमे रोपल छन्हि, ई सभ कोना कऽ से करताह।

७: (मुँह दुसैत) कल्पना..सोचू..सोचू।

(३ आ ४ समवेत गाबऽ लगैए आ वृद्धक मुँह गीत सुनबाक क्रममे झूस हेबऽ लगै छै; मुदा गीत सुनैत-सुनैत वृद्धा मुदित भऽ जाइए।)

बीया फँसैए महीसक केसमे
लऽ जाइए ओ दूरदेशमे
झाड़ैए देह पहुँचाबैए ओतए
रोपने पएर, चलि जाइ ओतए!!!!

(बिन हिलने दुनू गोटे हाथसँ दूर इशारा करैत अछि।)





३: बीयामे तेना कऽ नोकसी सन फाँस बनबै छिऐ जे ओ मालक देहमे बाझि कऽ दूर चलि जाए ।

४: आ दूर जा कऽ बीया ओतऽ नव गाछ जनमाबए।

३: पराग लऽ कऽ टिकली दूर जाइए।

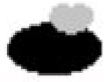
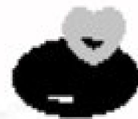
४: दोसर गाछकेँ ओइ परागसँ पुष्ट करैए..दूर देशमे।

८: कल्पना..ऽऽऽऽऽ।

(वृद्ध माथपर हाथ धऽ बैस जाइए, मुदा वृद्धा सेहो ओकर बगलमे बैस जाइए, आकाश दिस चिन्तित भऽ तकैत।)

४: जयन्त आब लगैए हमसभ खतम भऽ जाएब। जइ देशक वैज्ञानिक कल्पना नै करैत होथि ओतऽ की हएत? (हाथ घुमा कऽ पुछै छथि।)

३: अपाले। ओतऽ भविष्यक गाछ-बृच्छ विहीन कल्पना सत्य भऽ जाइए।


४: जेना एतऽ भेल अछि।
(३ आ ४ कानि कऽ गाबैए।)
जड़ि कटने भऽ जाएब छू
फूल पात सभ, लऽ लू
मरि गेल सभटा बुतरू
(दुनू खोंखी करऽ लगैए।)

(१ सँ ८ सभ बैसि जाइए आ गाबैए।)
जड़ि कटने भऽ जाएब छू।

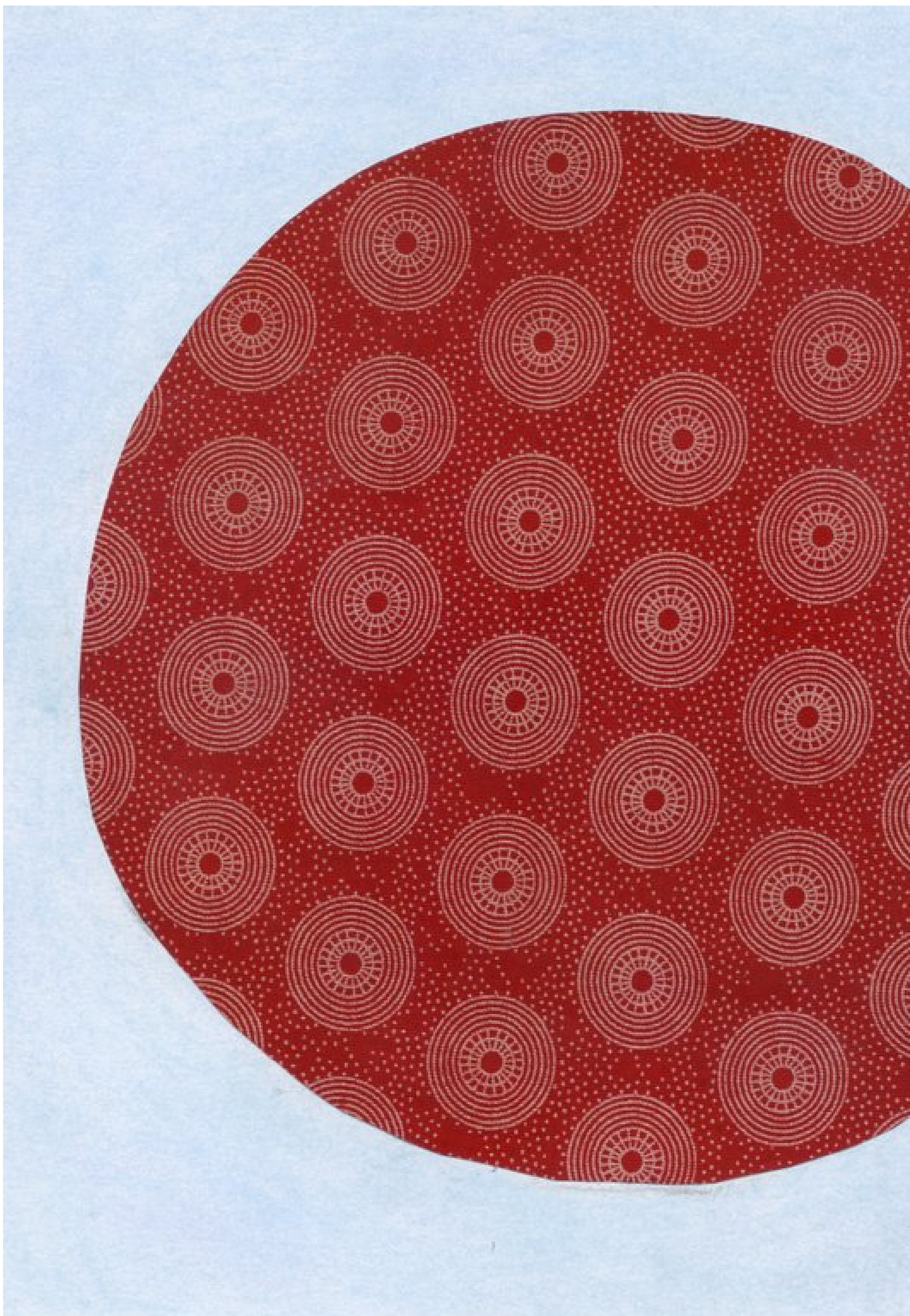
जड़ि कटने भऽ जाएब छू
फूल पात सभ, लऽ लू
मरि गेल सभटा बुतरू
(सभ खोंखी करऽ लगैए।)

जलोदीप

नाटककार गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।

गजेन्द्र ठाकुर





Story Attribution:

This story: भऽ जाएब छू (बाल चौबटिया-सड़क नाटक) (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले-Maithili's First Climate Fiction Play originally Published in 2012) is written by Gajendra Thakur . © Gajendra Thakur , 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: A river flowing , by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Three weather scenes, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: A girl in front of a placard, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: a river with pollutants, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: People washing clothes in the river, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: a paddy field and an ancient god, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: People cutting trees, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A brown patch against blue, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: A dolphin in the river, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: a river in a swirl, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: A city with a boat, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 12: The earth with speech bubbles around it, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A garden, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Trees and mountains , by Ruchi Shah, Students of Himalayan Public School © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Trees Cleaning the Air, by Rohan Chakravarty © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: The plants in a garden, by Sonal Gupta Vaswani © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Page 1, by Shloka Arvind © Shloka Arvind, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: disease caused by fly, by dia yadav © dia yadav, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Cylinder and cube , by Hari Kumar Nair © StoryWeaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: A red ball with circular patterns, by Marion Drew © African Storybook Initiative, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

भऽ जाएब छू (बाल चौबटिया-सड़क नाटक) (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले-Maithili's First Climate Fiction Play originally Published in 2012)

(Maithili)

जे पूरा कऽ दैतौं अहाँ हमर ओ कल्पना तँ हमहूँ बनि जइतौं भगजोगनी, । नै कटितै एतेक रास गाछ-बृच्छ, बोन देखू कतेक दूर भेल देखाइए .... (मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले-Maithili's First Climate Fiction Play originally Published in 2012)

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

